मंगलाष्टक

हर मांगलिक कार्य की स्थापना पर श्रावक को मंगलाष्टक पढ़ना चाहिये

(प्रत्येक पद को बोलते हुए थाल में पुष्पक्षेपण करते जावे)

ऋद्धि सिद्धि धारक परमेष्ठि, मंगलसमयी महा सुख धाम।
योगिश्वर जिनको ध्यातें हैं, ध्यान मग्न होकर निशियाम ॥
सुर सुरेन्द्र इन्द्रादि भक्तियुत, जिनको नमते नित अभिराम।
ऐसे पूज्य पंच परमेश्वर, इनको बारम्बार प्रणाम॥१॥

सम्यक दर्शन ज्ञान चरित ये, पावन रत्नत्रय अविकार।
सूक्ति सुधा जिन बिम्ब जिनालय, शुभ्र लक्ष्मी का आकार।
संकट हारी, सुख विस्तारी, श्री सम्पन्न महान उदार।
ऐसे मुक्ति नगर के वासी, मंगलमय शिव सुख दातार॥२॥

श्री आदीश आदि चौबीसों, तीर्थंकर त्रिलोक में ज्ञात।
भरत आदि जो द्वादश चक्री, इनसे गर्भित ज्ञान-प्रभात।
श्री नारायण प्रतिनारायण, बल भद्रादि जगत विख्यात।
ये शुभ मंगल करें निरन्तर, त्रेसठ महापुरुष दिन रात॥३॥

जिसके शुभ प्रभाव से फणधर, बन जाता मुक्ताहार।
क्रूरखंग भी इसी धर्म से, पुष्प माल बनती साकार।
विष बनता है दिव्य रसायन, स्नेही बनते शत्रु महान।
ऐसा धर्म सुरेन्द्रोपासित, मंगलमय हो पुण्य प्रधान॥४॥

उत्तम तप से वृद्धि प्राप्ति कर, की सर्वौषधि ऋद्धि प्रसन्न।
चारण आदि ऋद्धियांधारी, पंच ज्ञानद्धारा सम्पन्न॥
सप्त ऋषियों के अधिपति, अष्टांग निमित्तों से आसन्न।
ऐसे भव जल सेतु जिनेश्वर, सदा करें मंगल उत्पन्न॥५॥

ऊर्जयंत सम्मेदशिखर कैलाश श्रृंग श्री पावापूर।
करें ऋषभ, नेमीश, वीर की, ये निर्वाण भूमि दुख चूर।

वासुपूज्य की चम्पानगरी, करें प्राणियों के दुख दूर।।
पुण्यभूमियाँ रखें अमर यह, चढ़ता मंगलमय सिंदूर ।।६ ।।

व्यंतरवासी, भवन ज्योतिषी, वैमानिक निवास सुख खान।
जम्बू वृक्ष गिरिराज कुलाचन, चैत्य शाल्मलि विटप महान।।
कुण्डल नगर दीप नंदीश्वर, गिरि विजयार्द्ध आदि छविमान।
सकल मानुषोत्तर के पर्वत, मंदिर मंगल करे महान ।।७ ।।

गर्भ, जन्म-अभिषेक, महोत्सव, तीर्थंकर का क्रम निर्माण।
परिनिष्क्रमण महोत्सव, केवलज्ञान, महोत्सव मय निर्वाण।।
ऐसे पुण्य महोत्सव फूंके, नवदम्पति में जीवन प्राण।
ये महिमेष पंचकल्याणक, करें सदा मंगल कल्याण ।।८ ।।

महिमामयी पंचकल्याणक, मंगल अष्टक परम विशाल ।
पढ़ते, सुनते, जपते हैं जो, भक्ति सहित यह मंगल गान।।
अर्थ काम पुरुषार्थ युक्त सुख, सम्पत्तिधारी उन्नत माल।
सहज मोक्षलक्ष्मी पाकर के, बनते हैं समृद्धि निहाल ।।९ ।।

विनायक यन्त्र